विचार

नवभारत टाइम्स

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली । गुरुवार, 6 जून 2024

सरकार बनाने की जल्दी

लोकसभा चुनावों के नतीजे आने के बाद स्वाभाविक ही राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में सरकार गठन को लेकर गहमागहमी शुरू हो गई है। बहुमत बेशक NDA के पास है, लेकिन विपक्षी गठबंधन I.N.D.I.A. भी अपेक्षा से ज्यादा सीटें लाने की वजह से उत्साह में है।

दूसरे दलों पर निर्भरता | प्रधानमंत्री के तौर पर नरेंद्र मोदी के अब तक के दोनों कार्यकाल ऐसे रहे हैं, जिनमें उनकी अपनी पार्टी BJP को बहुमत हासिल रहा है। BJP के बहुमत की वजह से सहयोगी दलों के पास ज्यादा सौदेबाजी करने की गुंजाइश तब नहीं थी। अब पहली बार मोदी की अगुआई में ऐसी सरकार बनने के आसार दिख रहे हैं, जो अस्तित्व के लिए सहयोगी दलों के समर्थन पर निर्भर होगी।

सहयोग और समन्वय की दरकार

मांगों का सिलसिला | ऐसी स्थिति में अक्सर सरकार को समर्थन देने वाले दल अलग-अलग रूपों में इसकी कीमत वसूलना चाहते हैं। इस बार सहयोगी दलों की ओर से आधिकारिक तौर पर ऐसी कोई मांग सामने आने की सूचना अभी तक नहीं है, लेकिन सूत्रों के हवाले से मीडिया में ऐसी खबरें चलने लगी हैं कि लोकसभा अध्यक्ष पद और विशेष राज्य का दर्जा जैसी मांगें आगे की जा चुकी हैं।

अनुभवी नेतृत्व | इसमें दो राय नहीं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पास राजनीति का इतना लंबा अनुभव है कि उनके लिए इस तरह के दबावों को झेलना और तालमेल बनाए रखना ज्यादा मुश्किल नहीं होना चाहिए। लेकिन एन चंद्रबाबू नायडू और नीतीश कुमार दोनों अटल बिहारी वाजपेयी के दौर में भी NDA का हिस्सा रह चुके हैं। उस दौर में वाजपेयी सरकार को NDA के सहयोगी दलों के दबाव में तीन अहम मुद्दों – राम मंदिर, अनुच्छेद 370 और समान आचार संहिता – से दूरी बनाए रखनी पड़ी थी।

घटक दलों का अंकुश | सवाल उठना लाजिमी है कि क्या इस बार भी मोदी की अगुआई वाली सरकार को सहयोगी दलों की ओर से इस तरह की बंदिशों के बीच काम करना पड़ेगा। अगर हां तो यह सरकार के कामकाज की गति और दिशा पर किस तरह का प्रभाव डालेगा? मगर इन सवालों से पहले यह देखना होगा कि सरकार गठन की प्रक्रिया बिना किसी बाधा के पूरी हो जाती है या नहीं।

मजबूत विपक्ष | दिलचस्प है कि I.N.D.I.A. के भी कुछ घटक दलों की ओर से सरकार बनाने की इच्छा जताई गई है, लेकिन बहुमत से दूर होने की वजह से उनकी इच्छा पूरी होती नहीं दिख रही। यह जरूर है कि I.N.D.I.A. के बेहतर प्रदर्शन की बदौलत देश को लंबे असें बाद मजबूत विपक्ष मिला है। उम्मीद है कि सहयोगी दलों के तालमेल वाली सरकार और मजबूत विपक्ष का समन्वय देश में न केवल लोकतंत्र को मजबूती देगा बल्कि खुशहाली का नया दौर लाएगा।

ऑफबीट

गौतई और पूरनदा

सौरभ श्रीवास्तव

गौतई के बच्चे उड़ने लायक हो गए हैं। कुछ दिनों के प्रशिक्षण के बाद वे अपने माता-पिता के साथ लौट जाएंगे। इस्टोनिया की राष्ट्रीय पक्षी साइबेरियन बार्न स्वॉलो हर साल मार्च-अप्रैल के बीच उत्तराखंड में अंडे देने आती है। गौतई पहाड़ के घरों में गीली मिट्टी और तिनकों से घोसले बनाती है। एक बार बने हुए घोसले कई साल काम आते हैं। पहाड़ी लोग गौतई के लौट जाने के बाद उन्हें हटाते नहीं। वे गौतई के घोसला बनाने को शुभ मानते हैं, मान्यता है कि गौतई जिन घरों में घोसला बनाती है वहां संपन्नता आती है। इस वजह से गौतई को धनचिड़ि भी कहा जाता है।

सतखोल में पूरनदा एक छोटा होटल चलाते हैं, जहां चाय-नाश्ता और खाना मिलता है। होटल में गौतई के तीन घोसले हैं। एक घोसले में तीन बच्चे हैं, बाकी दो खाली हैं। मां-बाप उन्हें दिन भर उन्हें चारा खिलाते रहते हैं। बच्चों के पास दो ही काम हैं-खाने की मांग करते हुए चिचियाना और बीट करना। घोसला जहां होता है, उसके नीचे का फर्श बीट से पट जाता है। पूरनदा घोसले के नीचे अखबार बिछा देते हैं या कोई पुराना ढक्कन रख देते हैं ताकि फर्श गंदा न हो। पूरनदा बताते हैं कि एक बार गौतई खाना खाने की मेज के ठीक ऊपर घोसला बना लिया था। घोसले का मतलब था, मेज पर बीट का भंडार, बीट का भंडार यानि उस मेज पर ग्राहक नहीं बैठ सकते। होटल में कुल चार मेजें हैं। इनमें से एक मेज कम होने से आप नुकसान का अंदाजा लगा सकते हैं, लेकिन पूरनदा ने गौतई का घोसला नहीं हटाया। पहाड़ के लोगों का प्रकृति के साथ संबंध अलग है। पूरनदा कई बार दाल-चावल के बोरे खोलकर धूप दिखाते हैं। चिड़िया बोरों से चुगती हैं। पूरनदा उन्हें हटाते नहीं। वजह पूछने पर गुस्से से कहते हैं-वे कहां जाएंगी? यह उनका हक है।

प्रकृति, पशु-पक्षियों या जानवरों से मनुष्य के ऐसे संबंधों को शहर कब के निगल चुके हैं। पेट्स की बात अलग है। आप उन्हें पालते हैं, अपने अनुकूल ढालते हैं, अनुशासन सिखाते हैं। पहाड़ों या जंगली इलाकों में आपके संबंध उन जानवरों, पक्षियों से भी होते हैं जो जंगल की सीमा लांघ कर इंसानों की बस्ती में आते-जाते रहते हैं। आप उन्हें अपने घर में तो नहीं रखते हैं, लेकिन वे मनुष्य के घर, बसावट और उससे जुड़े तमाम क्रिया-कलापों में पूरे अधिकार से शामिल हो जाते हैं। इंसान भी अपने स्पेस में थोड़ा पीछे खिसक कर उन्हें जगह दे देता है। बड़े जानवरों से न सही पर पक्षी, गिलहरी, सड़क पर घूमने वाले आवारा कुत्तों, बिल्लियों से तो ऐसे संबंध विकसित किए ही जा सकते हैं। एक बार हमने उन्हें अपने स्पेस का हिस्सा मान लिया तो हमें गौरैया, गिद्ध वगैरह को बचाने के लिए विशेष अभियान चलाने की जरूरत नहीं होगी।

एकदा

जेब में गज़ल

मीर तकी मीर काम बेहद कमाल का करते थे, लेकिन नाराज हों तो उनकी नजर में नवाब और नौकर एक बराबर हो जाते। वाकया तब का है, जब वह लखनऊ में रहते थे। एक रोज नवाब आसिफुद्दौला ने उनसे एक गजल की फरमाइश की। मीर ने गजल कहने का वादा भी कर लिया। दो-तीन रोज बाद जब नवाब साहब ने मीर साहब को देखा तो पूछ बैठे, 'मीर साहब, हमारी गजल का क्या हुआ?' मीर साहब के तेवर बदल गए। तुरंत बोल पड़े, 'जनाब-ए-आली, विषय गुलाम की जेब में नहीं पड़े रहते हैं कि कल आपने फरमाइश की और आज हाजिर कर दे।' नवाब साहब मीर के मिजाज से वाकिफ थे। उन्होंने जवाब दिया, 'खैर मीर साहब, जब तबियत हो कह दीजिएगा।' फिर एक दिन नवाब ने बुला भेजा। जब पहुंचे तो देखा कि नवाब हौज के पास खड़े हैं। हाथ में छड़ी है और लाल-हरी मछलियां तैरती फिरती हैं, नवाब साहब तमाशा देख रहे हैं। नवाब मीर को देखकर बहुत खुश हुए और कहा, 'मीर साहब कुछ फरमाइए।' मीर ने गजल सुनानी शुरू की। नवाब साहब सुनते जाते थे और छड़ी से मछलियों के साथ खेल भी रहे थे। मीर चिढ़ जाते और हर शेर पढ़ने के बाद ठहर जाते। आखिरकार चार शेर पढ़ कर मीर ठहर गए और बोले, 'पढ़ूं क्या, आप मछलियों से खेले जाते हैं।' नवाब साहब ने जवाब दिया, 'जो अच्छा शेर होगा, खुद ही ध्यान खींच लेगा।' मीर को यह बात बहुत नागवार गुजरी। गजल जेब में रख वहां से चले आए और फिर पलट कर कभी नहीं गए।

Shital Verma

संकलन : **जमील गुलरेज**

हिंदुत्व की दुहाई देकर आर्थिक असमानता के प्रश्न को अब और अनदेखा नहीं किया जा सकता

ज़मीनी सियासत में क्या बदलाव आया

हिलाल अहमद

2024 लोकसभा चुनाव के नतीजों को दो तरह से देख सकते हैं। पहला, चुनाव में मिलने वाली सीटों और बनने वाले राजनीतिक समीकरणों का है। इस नजरिए से साफ है BJP की सीटें बेशक कम हो गई हैं, लेकिन NDA का आंकड़ा 293 पर पहुंच गया है। BJP के मत प्रतिशत में थोड़ी गिरावट आई है। यह गिरावट इतनी बड़ी नहीं है कि यह कहा जा सके कि देश की राजनीति में BJP का महत्व कम हो रहा है।

नई संभावना | दूसरी ओर I.N.D.I.A. का प्रदर्शन बेहतरीन रहा है। कांग्रेस बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। यूपी में समाजवादी पार्टी का प्रदर्शन भी अच्छा रहा है। कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के उदय और I.N.D.I.A. की मजबूती ने यह संभावना पैदा कर दी है कि राजनीति में केंद्रीकरण का दौर खत्म होगा और गठबंधन सरकारों का युग फिर लौटेगा। इन घटनाओं को देखने का एक और व्यापक नजरिया है, जो उन अर्थों की तरफ ले जाता है, जिन्हें लेकर भविष्य में राजनीति होनी है। इस नजरिए से तीन ऐसे पक्ष उजागर होते हैं, जिन पर बात करना जरूरी है।

चैरिटेबल स्टेट | पहला पक्ष है- राज्य की संरचना का। कांग्रेस और BJP के घोषणापत्रों में एक बात तो तय थी कि भारतीय राज्य की आर्थिक क्षेत्र में क्या भूमिका होने वाली है। BJP ने पिछले 10 सालों में स्थापित राज्य के मॉडल की रीपैकेजिंग करके अपने कैंपेन को आगे बढ़ाया। इस मॉडल को मैं चैरिटेबल स्टेट कहता हूं। एक ऐसा राज्य जो कहता है कि बाजार में राज्य का दखल नहीं होना चाहिए। दूसरी ओर, नागरिकों को होने वाली परेशानियों और गैर-बराबरी जैसे सवालों को दूर करने के लिए वह कल्याणकारी योजनाएं पेश करता है। इस मॉडल को BJP ही नहीं, अन्य पार्टियों की सरकारों ने भी अपनाया है।

क्या कहते हैं चुनाव परिणाम
- लोगों के मुद्दे राजनीति के केंद्र में
- राजनीति में बदला हिंदुत्व का विमर्श
- आर्थिक क्षेत्र से निकल रही बड़ी बहस

न्याय की चुनौती | दिलचस्प है कि पहली बार इस मॉडल को चुनौती कांग्रेस ने अपने घोषणापत्र में दी। कांग्रेस ने नव संकल्प आर्थिक नीति के तीन पक्ष रखे- वर्क, वेलफेयर और वेल्थ। उसने कहा कि केवल कल्याणकारी योजनाएं चलाने से ही बदलाव नहीं होगा, बल्कि जरूरी है कि राज्य ऐसे अवसर मुहैया कराए कि लोगों को सम्मानजनक रोजगार मिल सके। स्टेट और आर्थिक क्षेत्र का यह रिश्ता इस चुनाव में हमें एक बड़ी राष्ट्रीय बहस की ओर ले गया है, जो इन नतीजों का पहला पक्ष या पहला महत्वपूर्ण राजनीतिक अर्थ कहा जा सकता है।

हिंदुत्व का विमर्श | दूसरी अहम बात है राजनीतिक विमर्श में बदलाव। पिछले 10 वर्षों में हमने देखा कि हिंदुत्ववादी राष्ट्रवाद राजनीति का प्रमुख विमर्श हो गया। गैर-BJP दलों ने भी चुनावी रणनीतियां उसके आधार पर तय कीं। इस बार के चुनाव में यह चीज थोड़ी बदलती नजर आई, जब कांग्रेस और विपक्ष के लोगों ने सामाजिक न्याय के मुद्दे को नई तरह से प्रस्तुत किया।

आरक्षण से आगे | याद रखना होगा कि सामाजिक न्याय की यह राजनीति सिर्फ जातिगत आरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें आर्थिक गैर-बराबरी के प्रश्नों को भी शामिल किया गया है। शायद यही कारण था कि BJP ने आरक्षण की नीति को हिंदू-मुसलमान के नजरिए से सामने रखकर मतदाताओं को रिझाने की कोशिश की। इसका मतलब यह हुआ कि भारतीय राजनीति का जो बड़ा विमर्श है, चुनावी नतीजे बताते हैं कि जनता भी उस बदलाव की ओर उन्मुख है।

सामाजिक शून्यता | तीसरी बड़ी बात जो इस चुनाव से निकलकर आई, वह है सामाजिक क्षेत्र की पुनर्संरचना। याद रखना होगा कि आम तौर पर किसी भी लोकतंत्र में और खास तौर पर भारत में चुनाव केवल उस समय नहीं लड़े जाते, जब चुनाव की तारीख तय कर दी जाती है। समाज के स्तर पर राजनीति चलती रहती है।

क्या परिवर्तन हुआ | पिछले कुछ सालों में इस सामाजिक स्तर से BJP के अलावा तमाम राजनीतिक दल गायब हो गए थे। इसका कारण था कि BJP को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और दूसरी उससे जुड़ी हुई संस्थाओं का समर्थन हमेशा प्राप्त रहा है। ये संस्थाएं ऐसे समय में भी BJP की उपस्थिति दर्ज कराती हैं, जब चुनाव नहीं हो रहे होते हैं। किसी और गैर-BJP दल के पास यह सुविधा नहीं है क्योंकि उनकी सांस्कृतिक और सामाजिक संस्थाएं निष्क्रिय हो चुकी हैं।

मुद्दों की वापसी | राहुल गांधी की दोनों भारत जोड़ो यात्राएं इस संदर्भ में महत्वपूर्ण कही जा सकती हैं, क्योंकि इन यात्राओं ने भले ही कांग्रेस के अंदर ढांचागत परिवर्तन न किया हो, लेकिन उन्होंने जमीनी स्तर पर राजनीति को दोबारा से गर्मा दिया है।

जमीनी राजनीति बदली | पिछले एक दशक का सामाजिक क्षेत्र धर्म या सांप्रदायिकता के इर्द-गिर्द घूमता रहा। सामाजिक न्याय, बेरोजगारी और विकास के मुद्दे उठाने की जगह सामाजिक स्तर पर खत्म हो गई थी। इन चुनावों ने दिखाया है कि सामाजिक स्तर पर दोबारा से जमीनी राजनीति नई करवट ले रही है। ये तीन बड़े अर्थ इन चुनाव से निकलते हैं, जिनसे भारत के भावी लोकतंत्र की तस्वीर तय होगी।

(लेखक CSDS में असिस्टेंट प्रफेसर हैं)

चुनाव के दौरान लोगों ने मुझे ये बताया

रोहित मिश्र

चुनावी सरगर्मियां जोरों पर थीं। ईद का त्योहार भी बीत चुका था। यानी, पहले चरण की वोटिंग में अब गिने-चुने दिन ही रह गए थे। ऐसे में चुनावी माहौल जानने के लिए एक सफर शुरू किया गया, बस से। ऐसा सोचने के पीछे की वजह यही थी कि साधारण बसों में आम आदमी ही यात्रा करते हैं। यही चुनाव की दिशा तय करते हैं। सच में यह यात्रा इस मायने में बेहद रोचक थी कि आम आदमी जरा-सा कुरेदने पर अपनी जिंदगी की किताब का वह पन्ना खोल देता, जो वह आपसे साझा करना चाहता था। तमाम यात्राएं, कई जिंदगियों की किताबें और उनके बहुत से पन्ने। अब जबकि चुनाव परिणाम आ गए हैं तो उस पर जिंदगी की जद्दोजहद से जूझते लोगों का असर दिख भी रहा है।

महंगाई का सवाल | पूरी बस यात्रा में लखनऊ से रामपुर का ही सफर एसी बस में तय हुआ। सवारियां पैसा खर्चने की हैसियत में थीं, बावजूद इसके उन्हें महंगाई चुभ रही थी। परिवार के साथ रामपुर जा रहीं एक महिला ने चुनाव की चर्चा चलते ही कहा, 'चुनाव शुरू हुआ है, उसके पहले देखा कुछ दाम घटा दिए रसोई गैस के। पेट्रोल-डीजल भी सस्ता हो गया, लेकिन एक बार चुनाव बीतने दो, सरकार ब्याज समेत वसूलने में लग जाएगी।' उनकी बातों से ऐसा लगा कि मानो सरकार महंगाई नियंत्रित करना ही नहीं चाहती। ऐसा कितनी महिलाओं ने सोचा होगा, जिन्हें किचन का बजट तैयार करना पड़ता है और यह भी देखना होता है कि घर आने वाली कमाई में ही सब पूरा हो जाए?

करियर की चिंता | जब नरेंद्र मोदी पहली बार पीएम पद के दावेदार के रूप में चुनाव मैदान में थे, तब सबसे ज्यादा उत्साह युवाओं में था। उन्हें लगता था कि उनका भविष्य बदलने जा रहा है। लेकिन, इस यात्रा के दौरान बहुत से युवा करियर की चिंता से दो-चार दिखे। बरेली से पीलीभीत के सफर का वाकया है। बरेली में रहकर प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे मंजीत सिंह को अब चिंता सताने लगी है कि वह अगले एक-दो साल में सरकारी नौकरी के लिए ओवरएज हो जाएंगे। उन्हें इस बात की नाराजगी है कि नियमित तौर पर सरकारी भर्तियां आती नहीं और जब आती भी हैं तो पेपरलीक हो जा रहे हैं। प्राइवेट जॉब क्यों नहीं करते? इस सवाल के जवाब में मंजीत का सवाल था, 'प्राइवेट नौकरी में किस काम के लिए कितनी तनख्वाह मिलेगी, क्या सरकार तय कर सकती है?'

कॉमन रूम

योजनाओं में सेंध | इंसान अपनी जरूरत के मुताबिक चलते रहने के रास्ते तलाश ही लेता है। 10-12 किलोमीटर से ज्यादा लंबा सफर तो ऑटो या ई-रिक्शा में नहीं हो सकता। लिहाजा कम दूरी की सरकारी बसों में कुछ रुपये कंडक्टर को पकड़ा कर लोग अपने ठिकाने तक पहुंच जाते हैं। ये सवारियां बस के गेट पर खड़े-खड़े सफर पूरा कर लेती हैं। तपती धूप में लू के थपेड़े खिड़कियों के टूटे कांच से आम आदमी के चेहरे को लाल कर रहे होते हैं। अब चूंकि सुविधा का खर्च नहीं उठा सकते, तो रुमाल या गमछे से ढंक लेते हैं अपना चेहरा। बदायूं के सफर में जब ऐसे ही लोगों से सरकारी योजनाओं पर राय जानने की कोशिश की, तो वे गदगद दिखाई दिए। हालांकि उन्हें इससे नाराजगी थी कि योजनाएं पटल पर आतीं नहीं, पहले ही उनमें सेंधमारी हो जाती है। आवास योजना का पैसा खाते में आता है, लेकिन योजना में नाम शामिल करवाने के लिए जेब गर्म करनी पड़ती है। सरकार पूरा राशन दे रही है, लेकिन जो उसे बांट रहा है, वह मात्रा में कमी कर देता है।

अग्निवीर से नाराजगी | शाहजहांपुर से सीतापुर के सफर में मिले प्रेम प्रकाश। उन्होंने बताया कि हर साल तमाम रिश्तेदारों के यहां न्योता होता है, लेकिन सोचना पड़ता है कि कहां जाएं और कहां जाने से बचा जा सकता है। जेब भरी रहे तो सबको जाना अच्छा लगता है। इसी सफर में मिले आदित्य वर्मा ने बताया कि उनका लड़का दो साल में रिटायर हो जाएगा। आदित्य की उम्र 50 से कुछ ज्यादा थी। मैं चौंक गया। तब आदित्य ने बताया कि उनका बेटा अग्निवीर है।

(लोकसभा चुनाव के दौरान लेखक ने यूपी के कई संसदीय क्षेत्रों का बस से दौरा किया था)

जब हो गया था तख्तापलट का डर

इमरजेंसी के बाद हुए आम चुनाव में जनता ने कांग्रेस को खारिज कर दिया। इंदिरा को डर था कि सरकार उनके परिवार और खासतौर पर संजय गांधी के खिलाफ एक्शन ले सकती है। लेकिन, नई सरकार भी कम आशंकित नहीं थी। जनता पार्टी को एकबारगी यहां तक लगने लगा कि सत्ता के गलियारे में मौजूद इंदिरा के वफादार तख्तापलट कर सकते हैं।

बक्सों का रहस्य | इंदिरा गांधी की हार के कुछ ही घंटों बाद दिल्ली में इंटेलिजेंस ब्यूरो के जॉइंट डायरेक्टर वीवी नागरकर को सूचना मिली कि 1, सफदरजंग रोड स्थित आवास से दो बक्सों में डॉक्युमेंट्स छतरपुर स्थित फार्म हाउस भेजे गए हैं, जमीन में गाड़ने के लिए। नागरकर की सूचना पर जॉर्ज फर्नांडिस ने अपने राजनीतिक सचिव रवि नायर को टोह लेने भेजा। नायर और आईबी के एक डीसीपी फार्म हाउस पहुंचे। उन लोगों को वहां कुछ नहीं मिला। एक महीने बाद दोबारा जांच की गई। तब एक माली ने रवि को बताया कि संदूकों को खोदकर निकाल लिया गया है।

टाइम मशीन

राष्ट्रपति का अड़ंगा | जनता पार्टी की सरकार बनने के कुछ ही बाद की बात है, गृह मंत्री चरण सिंह के कहने पर कैबिनेट ने फैसला किया कि नौ राज्यों में कांग्रेस की सरकारों को बर्खास्त कर दिया जाए। इस बारे में कार्यवाहक राष्ट्रपति बीडी जत्ती के पास प्रस्ताव भेजा गया। लेकिन, जत्ती ने एक नहीं, बल्कि दो बार प्रस्ताव रोक दिया। 29 अप्रैल 1977 को उन्होंने सरकार को बताया कि उन्हें मामले पर सोच-विचार के लिए और समय चाहिए। इसने केंद्र को सकते में डाल दिया।

मंत्रियों की घबराहट | राष्ट्रपति के हस्ताक्षर करने से इनकार करने का परिणाम संवैधानिक संकट हो सकता था। चिंतित प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने 30 अप्रैल 1977 को कैबिनेट की बैठक बुलाई। मंत्रियों की घबराहट स्पष्ट थी। वे चिंतित थे कि कार्यवाहक राष्ट्रपति क्या कर सकता है। वे जानते थे कि जत्ती वफादार हैं इंदिरा गांधी के प्रति। हालांकि किसी भी मंत्री ने स्पष्ट रूप से नहीं कहा और यह सवाल वहां अनकहा रह गया कि क्या सशस्त्र सेना के सर्वोच्च कमांडर के रूप में जत्ती सेना को बुलाकर नई सरकार को सत्ता से हटा सकते हैं?

जगजीवन का आश्वासन | उस कैबिनेट मीटिंग में रक्षा मंत्री जगजीवन राम ने अपने सहयोगी मंत्रियों का डर दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने बताया कि इमरजेंसी के दौरान तत्कालीन रक्षा मंत्री बंसीलाल ने तब के सेना प्रमुख से मुलाकात कर आपातकाल को समर्थन देने के लिए कहा था। लेकिन, सेना प्रमुख ने इनकार कर दिया। जगजीवन राम ने कैबिनेट से कहा कि सेना पर संदेह नहीं करना चाहिए।

'कुछ होने वाला है' | उसी रात को जॉर्ज फर्नांडिस के पास फिर से आईबी ऑफिसर नागरकर का फोन आया और उन्होंने चेताया, 'कुछ होने वाला है।' तख्तापलट का संदेह फिर पनपने लगा। संदेह को तब और हवा मिली, जब तुरंत ही जॉर्ज के पास मधु लिमये का फोन आया। उन्हें भी अलर्ट किया गया। जॉर्ज फर्नांडिस ने फौरन अपने राजनीतिक सचिव रवि नायर को नई दिल्ली के हाई सिक्यॉरिटी एरिया का चक्कर लगाने के लिए भेजा। नायर ने उधार का एक दोपहिया वाहन लिया और लुटियंस का जायजा लेने निकल पड़े। उन्हें सेना मुख्यालय, ऑल इंडिया रेडियो या संसद भवन के पास, कहीं भी कुछ असामान्य नहीं मिला। वापस आकर उन्होंने जॉर्ज फर्नांडिस को रिपोर्ट दी कि सब सही है।

– **नवभारत टाइम्स**

महिला सांसद घटीं

प्रणव प्रियदर्शी

देश की 18वीं लोकसभा निर्वाचित हो चुकी है। इसके 543 सदस्यों में 73 महिलाएं हैं। यह स्थिति इस लिहाज से मायूस करने वाली कही जाएगी कि पिछली लोकसभा के मुकाबले इस बार महिलाओं की नुमाइंदगी बढ़ने के बजाय कम हुई है। 2019 के चुनाव में कुल 78 महिलाएं निर्वाचित हुई थीं। अगर प्रतिशत देखा जाए तो मौजूदा 18वीं लोकसभा में महिलाओं की मौजूदगी महज 13% बैठती है। देश की आधी आबादी के लिए तो यह अनुपात कम है ही, महिला आरक्षण विधेयक के जरिए महिलाओं के लिए प्रस्तावित 33% आरक्षण से भी बहुत कम है। यह स्थिति कानून के जरिए देश में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने की जरूरत को रेखांकित करती है। हालांकि चुनाव प्रक्रिया में वोट के जरिए भागीदारी में महिलाएं पीछे नहीं हैं। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि उनमें राजनीति को लेकर जागरूकता की कमी है। इसके बावजूद अगर निर्वाचित महिला सांसदों की संख्या में कमी आई है तो जाहिर है, मामला कहीं और फंस रहा है। राजनीतिक दलों की पहली प्राथमिकता ऐसे लोगों को टिकट देने की होती है जो जीतने के काबिल हों। फिर भी, 2019 के मुकाबले इस बार महिला प्रत्याशियों की संख्या कम नहीं थी। 2019 में 720 महिला प्रत्याशी थीं, जबकि 2024 में विभिन्न दलों ने 797 महिलाओं को टिकट दिया। फिर भी निर्वाचित महिला सांसदों की संख्या में गिरावट हुई जो बताती है कि जीतने की काबिलियत के मामले में महिलाओं को काफी आगे बढ़ना है। वैसे, अब तक की यात्रा की बात करें तो देश की संसद में महिलाओं की मौजूदगी धीरे-धीरे ही सही लेकिन बढ़ती रही है। 1962 के लोकसभा चुनाव में मात्र 74 महिलाएं मैदान में उतरीं, जिनमें 36 विजयी हुई थीं। जाहिर है, महिलाओं की संसद में नुमाइंदगी काफी बढ़ी है, लेकिन इसे अभी बहुत ज्यादा बढ़ाने की जरूरत है, जिसमें आरक्षण की व्यवस्था मददगार हो सकती है।

आधी दुनिया

THE SPEAKING TREE

और पढ़ने के लिए देखें

hindi.speakingtree.in

राम ने मर्यादा और कृष्ण ने प्रेम का मतलब सिखाया

जयति गोयल

शांति, अहिंसा, मानवाधिकार की बातें खूब होती है, पर आचरण के प्रति सजगता का अभाव अखरता है। लोग डरे-सहमे हुए हैं। एक-दूसरे को शक की नजरों से देख रहे हैं। मिलना-जुलना कम हो गया है। एक साधन है मोबाइल फोन, तो उस पर भी बातें कम ही होती हैं। मेसेज से काम चला लेते हैं लोग।

ध्यान देने वाली बात यह भी है कि देश में आस्तिक हैं, तो नास्तिक भी। राम हैं, तो रहीम भी। यीशु हैं, तो वाहे गुरु भी। यहां अलग-अलग जातियां, धर्म, संप्रदाय, भाषा, परंपराएं और संस्कृतियां हैं। हजारों साल से इन सबको संभालकर यह देश चला आ रहा है। किसी युग में राम के रूप में मर्यादा की महिमा बनी, तो किसी में कृष्ण के रूप में प्रेम की। कभी बुद्ध के रूप में करुणा की गंगा बही, तो कभी भगवान महावीर ने अहिंसा का पाठ पढ़ाया। यह हमारी पहचान है, जिसमें अच्छे आचरण और अहिंसा को सबसे ज्यादा महत्व दिया गया है।

शांति और अहिंसा इंसानियत को परिभाषित करती है। दूसरी ओर हिंसा भी कम नहीं हो रही है। प्रश्न उठता है, क्या हम हिंसा और अहिंसा को ठीक से समझ पा रहे हैं? क्या समय और परिस्थितियों में हिंसा-अहिंसा के अर्थ बदल जाते हैं। हिंसा की जो बात एक व्यक्ति पर लागू होती है, क्या दूसरे पर भी लागू होती है? क्या सभी परिस्थितियों में हिंसा की पहचान एक ही तरह से होती है? नहीं, ऐसा लगता है। संदर्भ बदलने से हिंसा और अहिंसा के अर्थ बदल जाते हैं। श्रीकृष्ण महाभारत में अर्जुन से यह नहीं कह रहे हैं कि वह हिंसा करें। वह तो अधर्म के सशस्त्र आक्रमण को रोकने के लिए, धर्म को बचाने के लिए बल-प्रयोग का उपदेश और आदेश देते हैं। क्या हिंसा और बल-प्रयोग समान हैं? वन के उन पशुओं को हम हिंसक कहते हैं, जो स्वयं से निर्बल जीवों को मारकर खा जाते हैं। लेकिन धर्म, देश, समाज की रक्षा करने वालों को हम कभी हिंसक नहीं कहते। वे बल-प्रयोग करते हुए भी हिंसक नहीं हैं। वे रक्षक कहलाते हैं। तो हिंसा और बल-प्रयोग का अंतर समझें। हिंसा से अधर्म की स्थापना होती है और अधर्म के विनाश के लिए अनासक्त बल-प्रयोग होता है।

श्रीकृष्ण ने कहा है कि, 'मन, वाणी और शरीर - किसी मनुष्य को किसी भी प्रकार से किसी को भी कष्ट नहीं देना चाहिए। सत्य और प्रिय बोलना चाहिए। कर्म में कर्तापन के अभिमान को त्यागना चाहिए, किसी की भी निंदा नहीं करनी चाहिए। शास्त्र विरुद्ध कर्म नहीं करना चाहिए।' यहां पर श्रीकृष्ण ने अहिंसा का उपदेश दिया और कहा कि अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। बेवजह किसी को सताना बिल्कुल सही नहीं है। महात्मा गांधी ने गीता से अहिंसा का पाठ सीखा और इसी अहिंसा के दम पर भारत को आजादी दिलाई। गांधी ने कहा भी है कि अहिंसा ही धर्म है।

सवाल यह भी उठता है कि क्या हथियार से ही व्यवस्था बनाई जाए? डराकर ही लोगों को नियम पर चलना सिखाया जाए? अगर ऐसा होता है, तो अहिंसा की आवाज कितना असर डाल पाएगी? समझना जरूरी है कि अहिंसा मनुष्यता की प्राण-वायु है। चाहे हम जितने मंगलयान-चंद्रयान बनाएं, साथ-साथ नहीं चल सके तो दुख का ही संसार बनेगा।

रीडर्स मेल

www.edit.nbt.in

■ कोई फॉर्म्युला नहीं

5 जून का संपादकीय 'सरप्राइज!' पढ़ा। सचमुच यूपी ने सरप्राइज दिया है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने राज्य को शानदार कानून व्यवस्था दी, रोजगार का प्रबंध भी उत्तम किया। केंद्र के साथ मिलकर कई काम किए। इसके बावजूद BJP को सिर्फ 32 सीटें मिलना हैरानी की बात है। सबसे ज्यादा चौंकाने वाला परिणाम रहा, पंजाब से कट्टरपंथी उपदेशक अमृतपाल सिंह का जेल में बंद होने के बावजूद एक लाख 97 हजार वोटों से जीतना। इसी तरह टेरर फंडिंग के आरोप में बंद जम्मू कश्मीर में इंजीनियर राशिद ने कद्दावर नेता उमर अब्दुल्ला को दो लाख वोटों से हरा दिया। ऐसे परिणाम निश्चित ही चौंकाने वाले हैं। देश के मतदाताओं के इस जनादेश को समझना आसान नहीं।

इन्द्र सिंह धिगान, किंग्जवे कैंप

■ चुनाव परिणाम पर चर्चा

5 जून के लेख 'क्या है 2024 के जनादेश का मतलब' में पहले लेखक ने NDA/BJP के 2019 के चुनाव की तुलना में 2024 में मिली कम सीटों पर बिना भेदभाव के, निष्पक्ष और ठोस तर्क रखे हैं। इसमें उन्होंने जो विचार दिए हैं, उनसे पाठक सहमत हैं। लेख के दूसरे पक्ष में आम सहमति की कमी, बिना बहस के बिल, विपक्ष से दुश्मनी, मुस्लिम लीग से तुलना, पीएम के खिलाफ शिकायतें जैसी बातें सटीक नहीं लग रही हैं। इनका चुनाव से संबंध नहीं है। कोरोना काल से निपटने में संसद में बहस न किए जाने पर उठाया गया सवाल तर्कपूर्ण नहीं लगता।

एस.एस. बिष्ट, विकासपुरी

■ चौंकाने वाला जनादेश

लोकसभा चुनाव में BJP अपने घटक दलों से मिलकर भले ही बहुमत का आंकड़ा पार कर गई हो, पर यूपी के रिजल्ट ने राजनीतिक दलों को सोचने पर मजबूर किया है। सबसे बड़ा उलटफेर उत्तर प्रदेश में देखने को मिला। यहां समाजवादी पार्टी ने तमाम एग्जिट पोल को गलत साबित करते हुए शानदार जीत दर्ज की। यहां से अजय मिश्रा टेनी, स्मृति ईरानी सहित कई दिग्गज नेताओं को अपनी सीट गंवानी पड़ी।

शिवेन्द्र यादव, ईमेल से

nbtedit@timesgroup.com पर अपनी राय नाम-पते के साथ मेल करें।

अंतिम पत्र

दिल्ली में 162 में से 148 कैंडिडेट जमानत भी नहीं बचा सके - खबर
- जमानत जब्त होने की किसे चिंता जब उम्मीद ही जब्त हो गई!

प्रशांत रावत

आर.एन.आई. नं. 510/57© सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित। स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड के लिए राजीव यादव द्वारा, 7 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा **टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, साइट IV, औद्योगिक क्षेत्र साहिबाबाद** और प्लॉट नंबर 7-8, सेक्टर M-11, ट्रांसपोर्ट हब, इंडस्ट्रियल मॉडल टाउनशिप, मानेसर, हरियाणा से मुद्रित। फोन : 23302000 फैक्सः 23492047, पंजीकृत कार्यालय : दादाभाई नौरोजी रोड, मुंबई-400001। विमान सेवा शुल्क : 1 रु. प्रति कॉपी। नेपाल में कुल मूल्य : सोमवार से शनिवार : नेपाली 5 रु. ; रविवार : नेपाली 6 रु.
संपादक (दिल्ली मार्केट) : आशीष पांडे (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी)

आगे देखने का समय

भारत में सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच वोटों का अंतर काफी हद तक मिट चुका है। देश के दो प्रमुख राष्ट्रीय दलों- भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस को अगर देखें, तो जहां सत्तारूढ़ भाजपा का वोट प्रतिशत घटा है, वहीं कांग्रेस का बढ़ा है। पहले बात भाजपा की करें, तो पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा को 37.3 प्रतिशत मत मिले थे, जिसमें इस बार एक प्रतिशत से कुछ ज्यादा की कमी आई है, पर सीटों की संख्या में तगड़ी गिरावट है। दूसरी ओर, 99 सीट जीतने वाली कांग्रेस का वोट प्रतिशत 19.5 प्रतिशत से बढ़कर 21.2 प्रतिशत हो गया है। वोट शेयर में बढ़त दो प्रतिशत भी नहीं है, लेकिन कांग्रेस की सीटों की संख्या लगभग दोगुनी हो गई है। अगर हम राज्यवार जाएं, तो उत्तर प्रदेश में एनडीए और विपक्षी गठबंधन के मतों में अंतर एक प्रतिशत भी नहीं रह गया है, जबकि महाराष्ट्र में तो वोटों के मामले में इंडिया ब्लॉक मामूली अंतर के साथ एनडीए से आगे निकल गया है। पिछली बार उत्तर प्रदेश में विपक्षी गठबंधन कम से कम 11 प्रतिशत वोटों से पीछे था। वोटों के आंकड़े आने वाले दिनों में स्पष्ट होंगे, लेकिन यह तय है कि विपक्ष ने वोटों की एक बड़ी खाई को पाट दिया है।

कांटे की यह टक्कर आखिर क्या इशारा कर रही है? शायद दलों के बीच का अंतर घट रहा है। आम आदमी पार्टी को ही अगर हम देखें, तो बड़े दावे के साथ यह पार्टी राजनीति में आई थी। इस बार भी चुनाव अभियान बहुत जोर-शोर से चलाया गया था, पर अपने राज्य पंजाब में वह महज तीन सीट पर जीत दर्ज कर सकी है। पिछली बार पंजाब विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी ने विपक्ष पर बिल्कुल झाड़ू फेर दिया था। शायद आम आदमी पार्टी में लोगों को कुछ खास नहीं दिखा। दिल्ली में भी पार्टी ने बहुत मेहनत की थी, चुनाव प्रचार के लिए अरविंद केजरीवाल विशेष जमानत के साथ बाहर आए थे। अंतर पैदा करने के वादे के साथ वह आए थे, लेकिन अब बाकी सहयोगी दलों जैसे ही लगने लगे हैं। ध्यान देने की बात है कि लोक-कल्याणकारी या जनहित या मुफ्त उपहार के अनेक वादे लगभग हर पार्टी ने किए हैं। इन पार्टियों के घोषणापत्र में बहुत ज्यादा अंतर नहीं रह गया है, जिसके नतीजे हम साफ देख रहे हैं।

जनता ने तीसरी दफा भरोसा जताया है, तो भाजपा को राष्ट्रहित के नए विचारों के साथ सामने आना चाहिए। उसे देखना होगा कि किन मुद्दों पर लोगों में नाराजगी है।

अब भविष्य के लिए राजनीतिक दलों के पास क्या योजनाएं हैं? कांग्रेस ने बड़े वादे किए थे, क्या वह अपने वादों को अपने द्वारा शासित राज्यों में लागू करेगी? राम मंदिर और अनुच्छेद 370 जैसे वादे पूरे करने के बाद भाजपा को समान आचार संहिता के अलावा भी बड़े ठोस सपने देखने होंगे? जनता ने एनडीए पर अगर तीसरी दफा भरोसा जताया है, तो विशेष रूप से भाजपा को राष्ट्रहित के नए विचारों के साथ सामने आना चाहिए। ईमानदारी से यह देखना होगा कि किन मुद्दों पर लोगों में नाराजगी है। यह संकेत मिल रहा है कि एनडीए का तीसरा कार्यकाल आर्थिक सुधारों पर केंद्रित हो सकता है। आम आदमी को राहत देने के लिए कदम उठाने पड़ेंगे। रोजगार जहां तक संभव है और जितनी जल्दी संभव है, देने में ही भलाई है। नौकरीपेशा और मध्यम वर्ग के लोगों के लिए कुछ ठोस करना होगा। यह सुरक्षा और सुरक्षा बलों के लिए भी सोचने का समय है। लोगों ने इशारा कर दिया है कि वे तमाम पार्टियों और सरकार को अच्छी राजनीति और अच्छी सेवा करते देखना चाहते हैं।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 06 जून, 1939

दक्षिण अफ्रीका में जातिगत भेद

नई दिल्ली, ५ जून। दक्षिण अफ्रीका के भारतीय नेता डा वाई एम दादू ने आज विधान परिषद के सदस्यों के सम्मुख एक भाषण में उन अमानवीय परिस्थितियों का वर्णन किया, जिनमें वहां अ-यूरोपीय को रहना पड़ रहा है। डा दादू ने कहा : ''दक्षिण अफ्रीका में जाति-भेद विशेष रूप से ऐसा क्यों जहरीला रूप धारण कर गया, इसका कारण मुख्यतः आर्थिक है, अर्थात् खेतों पर और खानों में काम करने के लिए सस्ते मजदूरों की आवश्यकता। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ऐसे कानून बनाए गए हैं कि अफ्रीका वासियों पर केवल १३ प्रतिशत भूमि है, जबकि उनकी संख्या ८० लाख है। यूरोपीयों के लिए ८७ प्रतिशत भूमि सुरक्षित है। इसके कारण अफ्रीकियों को काम के लिए झींकना पड़ता है। १२ वर्ष से अधिक वय वाले प्रत्येक अफ्रीकी को एक पौंड प्रतिवर्ष का एक कर अदा करना होता है। इसके लिए उसे मेहनत-मजदूरी करनी पड़ती है और खानों के निकट की बस्तियों में, जहां किसी प्रकार की भी कोई सुविधा नहीं है, रहने को बाध्य होना पड़ता है। फल यह होता है कि कुछ ही वर्षों में उसका स्वास्थ्य जवाब दे देता है। खेतों पर अफ्रीकी 'गुलामों जैसी' ही स्थिति में काम करते हैं।''

उन्होंने आगे बताया, ''मजदूरों के प्रवाह को नियंत्रित करने के लिए सरकार ने यह उपाय निकाला है कि प्रत्येक अफ्रीकी को अपने साथ एक पास रखना होता है। इस पास से यह प्रकट होता है कि उसको रखने वाले व्यक्ति को अपना क्षेत्र छोड़ने की आज्ञा मिली है अथवा नहीं- और वह क्या काम करता है। किसी भी समय कोई पुलिसवाला किसी भी अफ्रीकी का 'पास' देख सकता है और यदि उसके पास वह न निकले तो उसे तुरन्त जेल भेज सकता है। इस अपराध के लिए लगभग एक लाख अफ्रीकी प्रतिवर्ष जेलों की हवा खाते हैं। दक्षिण अफ्रीका के २ लाख ८२ हजार भारतीयों की स्थिति अफ्रीकियों की तुलना में कहीं अच्छी है। उनमें से ७० प्रतिशत से अधिक हद दर्जे की गरीबी में रहते हैं। केप प्रांत को छोड़कर उन्हें राजनीतिक अधिकार प्राप्त है। सामाजिक रूप से अ-यूरोपीय पूर्णतः पृथक कर दिये गये हैं।''

डरबन के दंगों का जिक्र करते हुए डा. दादू ने कहा कि ये दंगे सरकारी गुर्गों द्वारा भड़काये गये थे।

जनादेश के पांच सियासी सबक

यहां स्कैन करें
राहुल वर्मा | फेलो, सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च

मतदाताओं ने तमाम राजनीतिक दलों को यह संदेश दिया है कि विनम्रता के साथ राजनीति करिए, क्योंकि लोकतंत्र में अहंकार के लिए कोई जगह नहीं होती।

मंगलवार को आए चुनाव नतीजे अप्रत्याशित रहे। दस साल बाद देश में फिर से गठबंधन पर निर्भर सरकार बनने जा रही है। इन नतीजों को इसलिए भी आश्चर्य की नजर से देखा जा रहा है, क्योंकि तमाम एग्जिट पोल कयास लगा रहे थे कि भारतीय जनता पार्टी भारी बहुमत के साथ सरकार में लौट रही है। मगर नतीजे इससे उलट आए, भले ही भाजपा सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरकर सामने आई हो और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को बहुमत के लिए जरूरी आंकड़े भी मिल गए हों, लेकिन भाजपा अपने बूते बहुमत का जादुई आंकड़ा इस बार नहीं पा सकी।

इस जनादेश में सबके लिए कुछ न कुछ संदेश है। पहला संदेश तो भाजपा को मिला है कि कोई भी बहुमत स्थायी नहीं होता। लोकतंत्र में लगातार उथल-पुथल चलती रहती है। जिस पार्टी को आगे बढ़ने का मौका मिलता है, उसे नुकसान भी उठाना पड़ता है। यह सही है कि भारतीय जनता पार्टी को कुछ इलाकों में बड़ी सफलता मिली है, मसलन ओडिशा में व दक्षिण भारत के राज्यों में और उसने गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ जैसे मध्य भारत के सूबों में भी अपना दबदबा बनाए रखा है, मगर जिस उत्तर प्रदेश को उसका मजबूत दुर्ग कहा जाता है, वह इस बार दरक गया है। इसी तरह, हरियाणा और राजस्थान में भी उसे बड़े झटके लगे हैं। फिलहाल कहना मुश्किल है कि किन वजहों से पार्टी को हार का सामना करना पड़ा, लेकिन जैसा कि कुछ दिनों से लगातार कहा जा रहा था, देश के एक बड़े तबके में अपनी आर्थिक स्थिति को लेकर असंतोष बना हुआ है। भाजपा संभवतः इस नाराजगी को पूरी तरह से पढ़ नहीं पाई।

उसके लिए एक और सबक यह है कि सिर्फ नरेंद्र मोदी के चेहरे या गरीबों के लिए राशन योजना के नाम पर वह लगातार वोट नहीं जुटा सकती। फिर, '400 पार' का नारा भी अति-आत्मविश्वास का संकेत समझा गया। विपक्ष ने इस नारे का इस्तेमाल पिछड़ी जातियों, विशेषकर दलितों को यह समझाने में कर लिया कि संविधान बदलने की कवायद की जा रही है और उनका आरक्षण खत्म हो सकता है। भाजपा इस नैरेटिव की भी काट नहीं ढूंढ़ पाई।

दूसरा संदेश कांग्रेस और मुख्य रूप से 'इंडिया' ब्लॉक के लिए है। निस्संदेह, विपक्षी दलों के इस गठबंधन ने अपेक्षा से बेहतर प्रदर्शन किया है। हालांकि, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में वह एनडीए पर भारी साबित हुआ, पर दिल्ली जैसे सूबे में कुछ खास नहीं कर पाया है। कांग्रेस केरल और पंजाब का अपना गढ़ बचाने में सफल रही और हरियाणा, तेलंगाना व राजस्थान में भी उसने अच्छा प्रदर्शन किया है, लेकिन गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में, जहां उसका सीधा मुकाबला भाजपा से था, वहां उसे कुछ खास सफलता नहीं मिल सकी। कर्नाटक में भी उसका प्रदर्शन अपेक्षा के अनुरूप नहीं रहा है।

इस बार कांग्रेस की सीट और उसके मत-प्रतिशत में उल्लेखनीय इजाफा हुआ है। लगता है कि उसके आर्थिक न्याय की संकल्पना और जातिगत सर्वेक्षण जैसे मुद्दे कुछ मतदाताओं को प्रभावित करने में सफल रहे हैं। इसमें राहुल गांधी की भूमिका काफी अहम मानी जाएगी। उनकी दो भारत जोड़ो यात्राओं का भी शायद असर रहा है। इस गठबंधन के लिए सबसे बड़ा संदेश यही है कि बेशक उसे अपनी सियासी जमीन जमाने के लिए एक सहारा मिल गया है, लेकिन उसकी आगे की राह काफी लंबी और जटिल है। इस गठबंधन की अहम पार्टियों जैसे उद्धव ठाकरे की शिवसेना या शरद पवार गुट की एनसीपी को सहानुभूति का लाभ मिला है और देखना होगा कि विधानसभा चुनावों तक यही परिस्थिति बनी रहती है अथवा नहीं?

तीसरा संदेश उन विपक्षी पार्टियों के लिए है, जो न तो एनडीए में थीं और न 'इंडिया' में। जनादेश बताता है कि बिना खेमे वाले इन दलों को गहरी निराशा हाथ लगी है। बसपा जहां अपना खाता खोलने में भी विफल रही, वहीं बीजद को लोकसभा और विधानसभा, दोनों में करारी हार का सामना करना पड़ा है। दिल्ली में गठबंधन बनाकर लड़ने वाली आप को भी नुकसान उठाना पड़ा है। हां, पश्चिम बंगाल में अकेले चुनाव लड़ने वाली तृणमूल कांग्रेस ने अपना दमखम बचाए रखा है, लेकिन बाकी तमाम दलों को तेज झटका लगा है। इससे प्रतीत यही होता है कि भारतीय राजनीति अब दो ध्रुवों में बंट गई है और यदि कोई पार्टी इन गठबंधनों का हिस्सा नहीं है, तो उसे चुनावी संग्राम में खासी मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है।

चौथा संदेश चुनाव विश्लेषकों के लिए है। नतीजा बताता है कि एग्जिट पोल कई बार निष्प्रभावी भी हो सकते हैं। उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और कुछ हद तक महाराष्ट्र में तो चुनावी नतीजा एग्जिट पोल के बिल्कुल उलट रहा। कुछ विश्लेषक जरूर भाजपा के नुकसान की बात कह रहे थे, लेकिन उनका अनुमान उतना नहीं था, जिस तरह के जनादेश आए हैं। मतदाताओं ने इन चुनावी पंडितों को संकेत दिया है कि एक ही चश्मे से पूरे देश को देखना गलत है। अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग समस्याएं हैं और पार्टियों की ताकतें भी अलग-अलग होती हैं। जिन-जिन क्षेत्रों में चुनावी विश्लेषक इन समीकरणों को पढ़ने में सफल रहे, उनका नतीजा जनादेश से मेल खा गया, लेकिन जहां वे चूक गए, वहां मात खा गए।

पांचवां संदेश भारतीय लोकतंत्र के उन तमाम संस्थानों के लिए है, जिन पर लोकतंत्र को मजबूत रखने की अहम जिम्मेदारी है। फिर चाहे वे पारंपरिक व सोशल मीडिया हो या चुनाव आयोग जैसे संस्थान। जनता ने बताया है कि जनतंत्र जनता का, जनता द्वारा और जनता के लिए ही है। इसकी मजबूती के लिए लोकतंत्र के तमाम संस्थानों को आगे आना होगा। ये नतीजे इन संस्थानों के लिए सबक हैं कि वे अपना काम निष्पक्ष होकर करें, तभी जनता के हितों का पोषण हो सकेगा। वैसे, वोटरों ने राजनीतिक दलों को भी संदेश दिया है कि विनम्रता के साथ राजनीति करिए, क्योंकि लोकतंत्र में अहंकार की कोई जगह नहीं होती।

साफ है, यह जनादेश सभी को कुछ न कुछ संदेश दे रहा है। जरूरत है, तो सिर्फ इसे पढ़ने और समझने की। यदि इन सबक पर अमल करने का प्रयास किया गया, तो निस्संदेह भारतीय लोकतंत्र और ज्यादा समृद्ध व परिपक्व बनकर उभरेगा।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मजहब का अधिक इस्तेमाल करने वाले समाज को संदेश

यहां स्कैन करें
प्रशांत झा | एसोशिएट एडिटर, हिन्दुस्तान टाइम्स

अधिकतर हिंदू मतदाताओं ने धर्मनिरपेक्ष सामान्य ज्ञान को आज हिंदुत्व-युक्त सामान्य ज्ञान में बदल लिया है, मगर वे ऐसे सुसंगत, एकीकृत और समरूप हिंदू राजनीतिक पहचान बनाने के पक्ष में भी नहीं गए हैं, जो लगातार मुस्लिमों से मतभेद रखती है।

मुस्लिम मतदाता अपनी राजनीतिक आवाज और प्रतिनिधित्व चाहते हैं। अपनी पहचान के आधार पर वे किसी लोकतांत्रिक अधिकार से वंचित रहना नहीं चाहते, पर उनका भारत के संविधान में पूरा विश्वास है, वे हिंदू सामाजिक समूहों के साथ व्यापक चुनावी गठबंधन की जरूरत व अहमियत को पहचानते हैं। वे मुस्लिम पहचान-केंद्रित पार्टियों के बजाय मुख्यधारा के लोकतांत्रिक दलों के पीछे चलना चाहते हैं।

भारतीय मतदाता अपनी जातिगत पहचान से परे जाने के इच्छुक तो हैं, पर वे अभी भी अपनी जातिगत पहचान को अपने जीवन के अनुभव की रोशनी में देखते हैं। जाति की लामबंदी को वे एक वैध राजनीतिक साधन मानते हैं और वास्तविक या कथित जाति-आधारित अन्याय के एवज में लाभ चाहते हैं।

सांप्रदायिकता को एक जवाब मिल गया है, पर यह कहना गलती होगी कि यह जनादेश पुरानी शैली की धर्मनिरपेक्षता की जीत है।

वास्तव में, यही वह त्रि-आयामी सामाजिक संदेश है, जो 2024 के जनादेश से उभर रहा है। यह निष्कर्ष चुनाव अभियान की व्यापक रूपरेखा, सार्वजनिक संदेश और पार्टियों के राजनीतिक कार्यों पर आधारित है। विपक्ष ने दावा किया कि भाजपा संविधान को बदलने और दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों के लिए तय आरक्षण हटाने पर तुली हुई है; हालांकि, भाजपा ने कहा कि उसकी ऐसी कोई योजना नहीं है। भाजपा की ओर से यह दावा किया गया कि विपक्ष पिछड़े हिंदुओं के आरक्षण को हटाकर मुसलमानों को देना चाहता है; जबकि 'इंडिया' ब्लॉक की पार्टियों ने कहा कि उनकी ऐसी कोई योजना नहीं है।

धर्म के सवाल पर भाजपा ने एक दशक तक मुस्लिम राजनीतिक प्रतिनिधित्व को अपने दायरे में नगण्य ही रखा और मुस्लिम सियासी पहचान के किसी भी दावे को सांप्रदायिक माना। कई ऐसी घटनाएं हुईं, जिनसे भाजपा के कथित मुस्लिम विरोधी रुख को ठोस बल मिला। यह विपक्षी दलों के लिए चुनाव अभियान का मुद्दा बन गया। विपक्ष ने मुस्लिम वोटों को एकजुट करके मुकाबला किया। इस पृष्ठभूमि में जनादेश क्या संकेत दे रहा है?

तथ्य यह है कि मतदाताओं ने भाजपा को सबसे बड़ी पार्टी का दरजा दिया है, इसका मतलब है कि दूसरे कार्यकाल में उसके कुछ कामों की लोकप्रियता की कुछ हद तक पुष्टि हुई है, चाहे वह सीएए का पारित होना हो या अनुच्छेद 370 को प्रभावी ढंग से निरस्त करने का निर्णय हो। यह ध्यान देने की बात है कि कश्मीर व राम मंदिर मामले में विपक्ष ने भाजपा को खुली चुनौती देने की हिम्मत नहीं की। यहां तक कि विपक्ष ने मुस्लिमों को आनुपातिक रूप से वाजिब संख्या में टिकट देने से भी परहेज किया। विपक्ष की रणनीति में भी हिंदुत्व से लैस सामान्य ज्ञान का उदय हो चुका है। विपक्ष ने वैचारिक लड़ाई को टाल दिया और इसलिए यह कहना गलती होगी कि यह जनादेश पुरानी शैली की धर्मनिरपेक्षता की जीत है। फैजाबाद में भाजपा की चुनावी हार स्थानीय कारकों के चलते हो सकती है, पर इसे चुनावी मकसद के लिए धर्म के लगातार उपयोग या दुरुपयोग के विरोध के रूप में भी देखा जा सकता है।

इस लोकसभा चुनाव में यह साफ हुआ कि आरक्षण की वर्तमान संरचना आगे भी केंद्रीय विषय बनी रहेगी। कोई भी पार्टी दलितों, आदिवासियों और पिछड़ों के आरक्षण को हटाने की हिम्मत नहीं करेगी। एक तथ्य यह भी है कि कांग्रेस का वोट शेयर और सीट संख्या बढ़ी है, उसके मतदाताओं में युवा, पिछड़े और दलित मतदाता भी शामिल हैं, यह दर्शाता है कि इनकी मांगों में दम है।

तथ्य यह है कि भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनी हुई है - जातिगत जनगणना की मांग का समर्थन किए बिना और आनुपातिक प्रतिनिधित्व की मांग को स्पष्ट रूप से खारिज किए बिना। यह बताता है कि हिंदू समर्थक मतदाता बरकरार हैं और जातिगत पहचान-आधारित राजनीति भी जारी रहेगी। इसके मूल में पहचान-आधारित न्याय है, जिसने पहचान आधारित अंध-राष्ट्रवाद पर जीत हासिल की है। यह एक संदेश है कि पार्टियों को समाज में बंटवारे की खाई को गहरा करने के बजाय उसे पाटने पर ध्यान देना चाहिए।

मनसा वाचा कर्मणा

वृक्ष सा सहिष्णु बनें

हमारा मन क्यों भटकता है और इसको कैसे नियंत्रण में रखा जा सकता है? मन का स्वभाव ही है भटकना। खाली दिमाग शैतान की कार्यशाला है। यदि कर्म करने को कुछ न हो, तो मनुष्य जरूर बुरा काम करेगा। जब आप यह महसूस करते हैं कि आपके पास मन को काम देने का कोई उपाय नहीं है, तो उन परिस्थितियों में क्या करेंगे? बिना समय गंवाए दो-चार व्यक्तियों को इकट्ठा करें और तुरंत कीर्तन करना शुरू कर दें। इससे मन का पतन नहीं होगा, बल्कि उसकी उन्नति होगी।

यहां प्रश्न उठता है, किसका कीर्तन? परम-पुरुष का कीर्तन। परमात्मा के हजारों-लाखों नाम हैं। चूंकि उनके असीम गुण हैं, इसलिए उनके नाम भी असीम हैं। लेकिन परम पुरुष का एक नाम है, जो सबके लिए है- हरि! उनके साथ आपका व्यक्तिगत, पारिवारिक संबंध है।

हर परिवार में माता-पिता अपने बच्चों से प्यार करते हैं। अगर बच्चे गलत करते हैं, तो वे उन्हें डांटते हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि यह रिश्ता प्यार का है। यह जज और अपराधी के बीच का संबंध नहीं है। यह पूर्णतः व्यक्तिगत और रक्त का रिश्ता है। बहुत से लोग कहते हैं कि परम-पुरुष एक न्यायाधीश है। नहीं, उनकी भूमिका न्यायाधीश की नहीं, मार्गदर्शक की है। वह राह दिखाते हैं। परम-पुरुष को न्यायाधीश क्यों होना चाहिए? एक न्यायाधीश सांसारिक दुनिया की चीज है। सांसारिक दुनिया में अगर कोई अन्यायपूर्ण कार्य करता है, तो समाज उस व्यक्ति को दंडित करने का प्रयास करेगा। लेकिन आध्यात्मिक क्षेत्र में परम-पुरुष उन लोगों को अपनी गोद में ले जाएगा, जो परम चेतना के भक्त हैं।

न्यायपालिका सामान्य मनुष्यों के लिए होनी चाहिए। समाज को स्वच्छ रखने के लिए, कानून-व्यवस्था के विरुद्ध कार्य करने वाले को सजा दिलाने के लिए। लेकिन अगर प्रेम का रिश्ता हो और परम-पुरुष किसी से कहें- हे भक्त, मुझे अपने सारे पाप दे दो, तो भक्त कभी भी उन्हें उपकृत नहीं करेगा, बल्कि यही कहेगा कि नाथ, मैं आपको फूल, फल, पकवान, मिठाई ही अर्पित करूंगा, अपने पाप कैसे दे दूं? मैं यह नहीं कर सकता। भक्त कभी अपना पाप नहीं देगा। लेकिन भक्त परम-पुरुष को अत्यंत प्रिय है। वह उसके पाप चुपके से हर लेते हैं। इसीलिए उनका एक नाम हरि भी है।

जब मनुष्य वृक्ष को काट रहा होता है, तब भी वह उसे अपनी छाया से वंचित नहीं करता। याद रखें, व्यक्तिगत जीवन में सहनशीलता एक महान मानवीय गुण है।

प्रत्येक आध्यात्मिक व्यक्ति को वृक्ष-सा सहिष्णु बनना चाहिए। जब मनुष्य वृक्ष को काट रहा होता है, तब भी पेड़ उसे अपनी छाया से वंचित नहीं करता। याद रखें, व्यक्तिगत जीवन में सहनशीलता एक महान गुण है। लेकिन सामूहिक जीवन में? नहीं, सामूहिक जीवन में यह एक अवगुण है। सामूहिक जीवन में हमलावरों के साथ संघर्ष करना पड़ता है। जब समाज और राष्ट्र पर कोई आंच आए, तो वहां क्षमाशीलता शोभा नहीं देती।

श्री श्री आनंदमूर्ति

शेखर कपूर | फिल्म निर्देशक

मुझे भारत पर गर्व है। अभी-अभी यहां पर दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक चुनाव हुआ है और कई सांस्कृतिक, जातीय व दूसरे मतभेदों के बावजूद एक राष्ट्र के रूप में हम एकजुट हैं, जबकि दूसरे बड़े लोकतंत्रों पर गृहयुद्ध की ओर बढ़ने का खतरा है!

एक अकेला सब पर पड़ा भारी

डेढ़ दर्जन से भी अधिक दलों ने एड़ी-चोटी का जोर लगाकर नरेंद्र मोदी को सत्ता से हटाने का बीड़ा उठाया था, लेकिन चुनावी नतीजे बताते हैं कि वे अपनी मंशा में सफल नहीं हो पाए। उनका 'इंडिया' समूह भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन, यानी राजग से पार नहीं पा सका। भले ही इंडिया दंभ भर रहा हो, लेकिन सच यही है कि नरेंद्र मोदी अकेले सब पर भारी रहे। राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस शतक के करीब तक पहुंच गई और अखिलेश यादव ने भी उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी को एक नई ऊंचाई दे दी। उधर, पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस भाजपा से सीटें छीनने में सफल रही और द्रमुक ने दक्षिण में अपना दमखम दिखाया। फिर भी, अकेली भाजपा सब दलों से आगे रही है। अकेले उसे इतनी सीटें आई हैं, जितनी ये तमाम पार्टियां मिलकर भी नहीं जुटा पाईं। और 'इंडिया' ब्लॉक तो 250 का आंकड़ा भी नहीं पार कर सका, बहुमत को खैर दूर की बात है। स्पष्ट है, तमाम प्रयासों के बावजूद नरेंद्र मोदी अपने तीसरे कार्यकाल की ओर बढ़ गए हैं और उन्होंने उन सबको करारा जवाब दिया है, जो कहते थे कि संविधान खतरे में है या आरक्षण का लाभ छीना जा सकता है। अब सबको साफ हो जाना चाहिए कि न आरक्षण खत्म किया जा रहा है, न संविधान बदला जा रहा है।

महेश नेनावा, टिप्पणीकार

जीत का अर्थ

2024 के संसदीय चुनाव का परिणाम सामने आने के साथ चुनाव-पूर्व दावों और एग्जिट पोल के अनुमानों की धुंध छंट चुकी है। अब भले नरेंद्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनकर पंडित जवाहरलाल नेहरू के रिकॉर्ड की बराबरी कर लें, मगर उनकी चमक फीकी पड़ेगी। इससे कितनों की छाती ठंडी हुई होगी, इसका अनुमान लगाया जा सकता है। भाजपानीत एनडीए का कमजोर होना भारत-विरोधी पड़ोसी देशों, जेहादियों, टुकड़े-टुकड़े गैंग, परिवारवादी-जातिवादी समूहों व कानून के शिकंजे तक खींच लाए गए माफिया-भ्रष्टाचारी पृष्ठभूमि के राजनीतिज्ञों के लिए उत्सव सरीखा है। विडंबना यह कि एकजुट नकारात्मक शक्तियों की जीत का यह राजमार्ग करोड़ों सुविधाभोगी, आत्मकेंद्रित और सुकुमार सज्जनों की आत्मघाती निष्क्रियता के जड़ पत्थरों ने तैयार किया है। हालांकि, सुखद यह है कि इस परिणाम में चुनाव आयोग की साख, उसकी निष्पक्षता और ईवीएम पर भरोसा कायम हुआ। वास्तव में, देश की जनता ने ऐसा जनादेश दिया है कि मोदी जी नेहरू की बराबरी भी करें और वाजपेयी की तरह गठबंधन धर्म का पालन करते हुए कमजोर सरकार चलाएं।

कुमार दिनेश, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम
जनादेश-2024

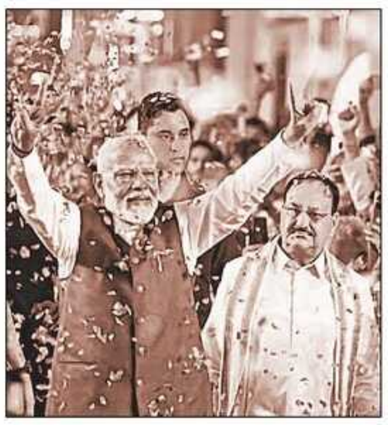

भाजपा के दिन अब लदने लगे

पिछले कुछ महीनों से जोर-शोर से यह भ्रम फैलाया जा रहा था कि इस बार काफी धूमधाम से 400 पार करके मोदी सरकार वापसी कर रही है। विशेषकर उत्तर प्रदेश में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के बाद यह उम्मीद जताई गई थी कि इस बार योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश की सारी सीटें बड़ी आसानी से भाजपा जीतने वाली है। यहां से सपा और कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो जाएगा। फिर, मोदी की गारंटी और योगी के दमदार शासन की घुट्टी कुछ इस तरह से जनता को पिलाई गई थी कि ऐसा लगने लगा था, देश उत्तर प्रदेश की शासन-व्यवस्था से काफी प्रभावित है। फिर, जिस तरह से 1 जून को मतदान के आखिरी चरण के बाद टीवी चैनलों ने चीख-चीखकर उत्तर प्रदेश में फतह के साथ अबकी बार 400 पार का दावा करना शुरू किया, तो लगा, भाजपा चमत्कार करने जा रही है। मगर 4 जून का नतीजा अप्रत्याशित दिखा। इन नतीजों ने न केवल नरेंद्र मोदी और अमित शाह के सपने को तोड़ा, बल्कि उत्तर प्रदेश के शासन को लेकर भ्रम भी दूर कर दिया। इंडिया ब्लॉक का असर देश के दूसरे हिस्सों में भी दिखा और 400 पार के नारे की हवा निकल गई। आलम यह रहा कि स्वयं भाजपा भी इस बार अपने दम पर 272 सीटें नहीं जुटा सकी। जाहिर है, यह अब एनडीए के लिए आत्ममंथन का समय है। उसे अपने सभी सहयोगी दलों को सहेजकर रखना होगा। यह नतीजा बताता है कि अब हिंदू-मुस्लिम की राजनीति को छोड़ना जरूरी है। जब देश में शिक्षित बेरोजगारों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है, तब अमीरों को फायदा पहुंचाने के बजाय गरीब, मध्यम वर्ग के हितों की योजनाएं बनाने की तरफ सरकार को ध्यान देना चाहिए। अन्यथा, अभी जो बाजी पलटते-पलटते रह गई है, वह आगे चलकर पूरी तरह से पलट भी सकती है।

मनमोहन राजावत राज, टिप्पणीकार

कठघरे में गारंटी

आखिरकार वही हुआ, जिसका अंदेशा था। जनता-जनार्दन ने अपना रुख स्पष्ट करते हुए सरकार की गारंटी को कठघरे में खड़ा कर दिया। सबसे दिलचस्प नतीजा उत्तर प्रदेश का है, जहां न तो राम मंदिर का अलौकिक मुद्दा चला और न ही मुफ्त अनाज का खेल। बिहार में भी नीतीश कुमार बड़े राजनीतिक खिलाड़ी बनकर उभरे हैं और उनके रुख पर बहुत कुछ टिका होगा। वैसे, उनका तीर अभी निशाने पर है और उनका राजनीतिक भाव भी बढ़ चुका है। बंगाल और कर्नाटक में भी सत्तारूढ़ दल को नुकसान उठाना पड़ा है। साफ है, यह नतीजा एनडीए के लिए आंखें खोलने वाला साबित हो रहा है।

हर्षवर्द्धन, टिप्पणीकार

सीएसई है लक्ष्य, तो पहले समझें खास बातें

जून 16 को यूपीएससी सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा-2024 आयोजित होनी है। भारतीय प्रशासनिक सेवाओं का हिस्सा बनाने वाली सिविल सेवा परीक्षाएं (सीएसई) स्वर्णिम भविष्य का द्वार मानी जाती हैं। लेकिन इसे दुनिया की कठिनतम परीक्षाओं में भी शुमार किया जाता है। इसीलिए इसे लक्ष्य करने से पहले कुछेक पहलुओं पर अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए। बता रहे हैं हमारे विशेषज्ञ

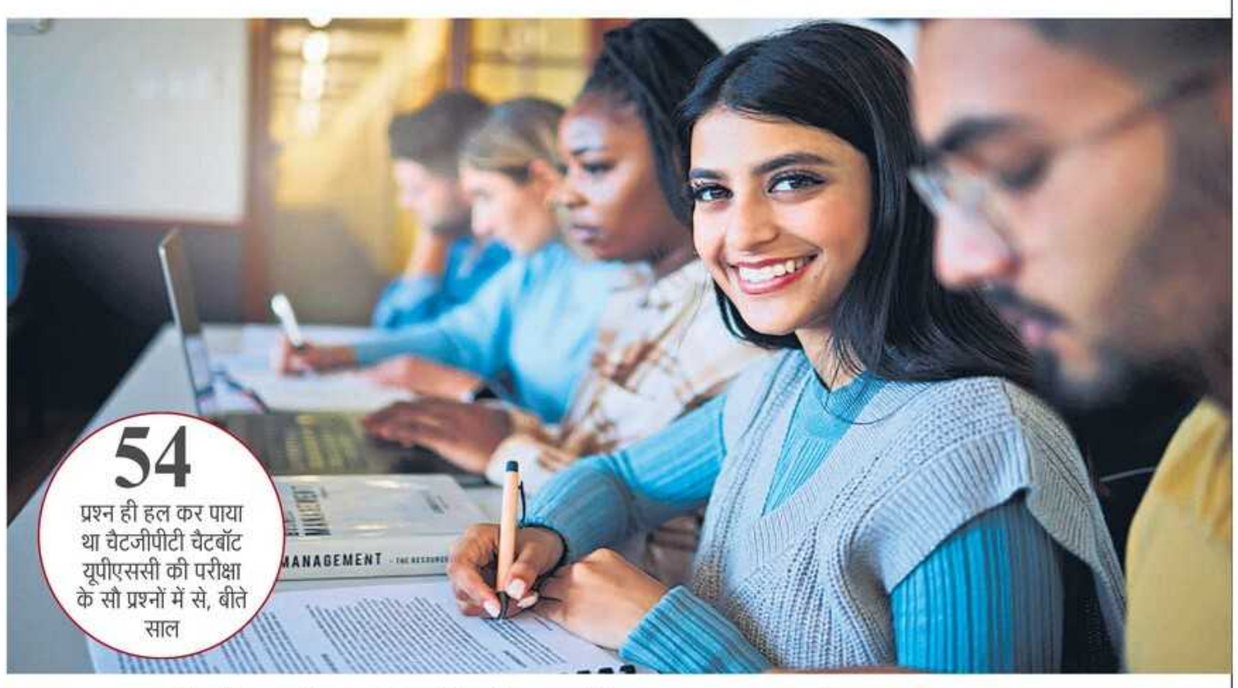

54
प्रश्न ही हल कर पाया था चैटजीपीटी चैटबॉट यूपीएससी की परीक्षा के सौ प्रश्नों में से, बीते साल

आशीष आदर्श
करियर काउंसलर

एक बार एक छात्र सिविल सेवा के इंटरव्यू के पड़ाव तक पहुंचा। इंटरव्यू बोर्ड ने देखा कि उसका रिकॉर्ड बहुत शानदार रहा है। सवाल-जवाब के दौर में एक बोर्ड सदस्य ने पूछा, 'आप इतनी जानकारी कैसे रखते हैं?' छात्र ने जवाब दिया, 'मैं अखबार फेंकने से पहले यह देखता था कि कहीं उसमें ऐसी कोई जानकारी तो नहीं, जो मैं अभी तक जान नहीं पाया? मेरी इस आदत ने मेरे अंदर ज्ञान के प्रति भूख जगाए रखी।' अगर आप सिविल सेवा अधिकारी बनने का सपना देखते हैं, तो विविध जानकारियों की ऐसी ही भूख आपको अपने अंदर जगानी होगी। क्योंकि इस परीक्षा को दुनिया की सबसे कठिन परीक्षा माना जाता है। यह यात्रा कुछ माह तक सीमित नहीं होती। इसलिए शुरू से ही अपने अंदर एक आग जलाए रखनी होती है।

क्या है यह परीक्षा

■ सिविल सेवा परीक्षाएं यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन द्वारा प्रत्येक वर्ष आयोजित की जाती हैं। 1000 से 1100 तक की संख्या में अधिकारियों की नियुक्ति ग्रुप ए के तहत होती है। बिना भेदभाव के, पसंद, परीक्षा में प्रदर्शन और रैंकिंग के आधार पर उत्तीर्ण छात्रों को विभिन्न सेवाओं में प्रस्ताव दिए जाते है। जैसे क्रम में आईएफएस, आईएएस, आईपीएस, आईआरएस। तो, अगर आप स्नातक हैं तो अधिकतम 32 वर्ष की आयु तक, (एससी एसटी वर्ग के लिए 37 वर्ष और ओबीसी के लिए 35 वर्ष) इस परीक्षा को आजमा सकते हैं।

01
फीसदी के लगभग, दस लाख में से, यूपीएससी परीक्षा के पहले चरण से अगले चरण तक पहुंच पाते हैं

क्या होती है प्रक्रिया

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के कुल तीन चरण होते हैं- प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा व साक्षात्कार। प्रारंभिक परीक्षा में दो पेपर होते हैं, जो एक ही दिन की दो शिफ्ट में लिए जाते हैं - जनरल स्टडीज (पेपर I) एवं सिविल सर्विस ऐप्टीट्यूड टेस्ट यानी सीसैट (पेपर II)। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के इस चरण को उत्तीर्ण कर आप मुख्य परीक्षा में बैठ सकते हैं। मुख्य परीक्षा में आपको कुल 9 पेपर देने होते हैं। जो कि विवरणात्मक (डिस्क्रिप्टिव) प्रकृति के होते हैं। इसमें चयन होने पर साक्षात्कार में बुलाया जाता है और उसके पश्चात चयन मेरिट लिस्ट के आधार पर होता है। आपके स्कोर के आधार पर सेवा का प्रस्ताव मिलता है।

क्या होती हैं चुनौतियां

■ बहुत विस्तृत सिलेबस और उसकी तैयारी।
■ इसमें हर साल 5.5 लाख के लगभग उम्मीदवार बैठते हैं। हर साल इसमें आईआईटी और आईआईएम से बैठने वाले बहुत से युवा होते हैं।
■ हर साल इस परीक्षा का स्तर कठिन होता जा रहा है। सिर्फ तथ्यों को याद करने से काम नहीं बनता।
■ परीक्षा की तैयारी का एक फॉर्मूला नहीं होता है।
■ लंबी तैयारी के बाद भी नतीजे के बारे में कुछ भी कहना संभव नहीं होता।
■ परीक्षा के तीन चरण यानी प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा और इंटरव्यू एक समान कठिन होते हैं।
■ लंबी परीक्षा प्रक्रिया धैर्य की भी परीक्षा होती है।

क्या हो रणनीति ?

सफल लोगों की मानें तो सिविल सेवा परीक्षा को 3 से 4 वर्ष देने के लिए तैयार रहें। क्योंकि इस परीक्षा का सिलेबस बहुत विस्तृत है और कई विषयों से संबंधित है। अतः आपको ग्रेजुएशन के पहले वर्ष से ही उस पर फोकस करना प्रारंभ कर देना चाहिए

इन 10 बातों को अपनी रणनीति में शामिल करें:

1. यूपीएससी परीक्षा के पूरे स्ट्रक्चर को ध्यान से देखकर उसका आकलन करना जरूरी है, ताकि आप यह जान सकें कि किस परीक्षा में आपको किन विषयों से किस प्रकार के प्रश्न हल करने होंगे।
2. परीक्षा में सबसे बड़ी जरूरत अध्ययन की दिनचर्या में सतत प्रयास की है, जिसके बगैर इस क्षेत्र में आप कुछ भी हासिल नहीं कर सकते।
3. चूंकि यूपीएससी के विषय का दायरा बहुत वृहद् है, अतः प्रत्येक विषय के नोट्स तैयार करना बेहद जरूरी है। उनसे रिवीजन में आसानी होती है। नोट्स कैसे होने चाहिए, इसके लिए सफल छात्रों के कई सैम्पल आपको इंटरनेट पर मिल जाएंगे।
4. एक सही टेस्ट सिरीज का चुनाव बेहद जरूरी है। इसमें अपने गाइड से जानकारी लें। इससे आपको यह पता चलेगा कि आपको आगे किस विषय में और कितनी तैयारी की जरूरत है।
5. इंटरनेट पर यूपीएससी में सफल लोगों के इंटरव्यू देखें। उनकी सलाहों से आप यह जान सकते हैं कि आपकी रणनीति में कहां गलती हो रही है।
6. टाइम मैनेजमेंट इस क्षेत्र में सफलता की पहली शर्त है। पढ़ाई के घंटों में हमने क्या प्राप्त किया, इसका आकलन करना जरूरी है।
7. राइटिंग स्किल्स को विकसित करना बेहद जरूरी है, मुख्य परीक्षा में आपको सीमित समय के अंदर सब्जेक्टिव जवाब लिखना है और आपकी मुख्य परीक्षा आपकी सफलता या असफलता को तय करती है।
8. करेंट अफेयर्स पर पकड़ बनाने के लिए नियमित रूप से समाचार पत्र कम से कम 1 घंटा छानें जरूर और महत्वपूर्ण संपादकीय लेखों को सहेजकर रखें और उसमें तथ्यों को अंडरलाइन करें। यह आपको लिखित परीक्षा के साथ साक्षात्कार में भी बड़ा स्कोर प्राप्त करने में मदद करेगा।
9. सोशल मीडिया को 24 घंटे में मात्र 30 मिनट या कम ही समय दें या इससे दूर रहें, तो बेहतर।
10. सकारात्मक रुख रखें। क्योंकि एक सकारात्मक सोच से खुद को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।

कुछ मिथक

■ **बड़े कॉलेजों के छात्र ही इस परीक्षा के योग्य होते हैं।**
तथ्य: यह परीक्षा आपकी जानकारी ही नहीं, व्यक्तित्व, माइंडसेट, स्किल्स, क्रिटिकल थिंकिंग, विश्लेषण क्षमता और सेवाभाव की परीक्षा भी लेती है।
■ **अंग्रेजी माध्यम से सफलता की संभावना ज्यादा।**
तथ्य : इस परीक्षा में आप अपनी भाषा खुद चुन सकते हैं। जो भी भाषा चुनें, उसमें आपकी अभिव्यक्ति स्पष्ट और बढ़िया पकड़ होना जरूरी होता है।
■ **कोचिंग इस परीक्षा के लिए जरूरी होती है।**
तथ्य: कोचिंग से आपको मदद मिलती है, लेकिन कोचिंग सफलता का एकमात्र रास्ता नहीं।
■ **कम से कम 16 घंटे तैयारी करनी होगी।**
तथ्य: पूरी तैयारी टाइम मैनेजमेंट, विषयों पर पकड़, अपनी जरूरतों और तैयारी के बीच संतुलन बनाने की कुशल रणनीति की बात है। सिर्फ हर दिन 15-16 घंटे पढ़ना ही इसकी गारंटी नहीं है।

छोटे शहरों के बड़े सपने

यूपीएससी सिविल सेवा के लिए यदि हम सफल युवाओं का औसत निकालें, तो पाएंगे कि भारत के दूर दराज के छोटे कस्बों के युवा अपनी मेहनत से सफलता की कहानियां लिख रहे हैं। यदि बीते 5 वर्षों के सफल छात्रों को देखें, तो हरेक वर्ष सबसे अधिक सफल युवा उत्तर प्रदेश से 110 से 125 के आसपास थे, वहीं दूसरे नंबर पर राजस्थान और तमिलनाडु रहा। इनमें प्रत्येक राज्य के छोटे-छोटे जिलों से अमूमन 90 से 95 युवाओं ने सफलता पायी। बिहार और आंध्र से 60 से 70 युवाओं ने यह परीक्षा निकाली।

जॉब/करियर न्यूज

■ बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स की ओर से वाटर विंग के तहत ग्रुप बी व ग्रुप सी में नियुक्तियों के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। ये सीधी भर्ती आधारित नियुक्तियां होंगी।
कुल पद: 162 पद। कॉन्स्टेबल व एसआई के पदनाम से।
आवेदन की अंतिम तिथि: 01 जुलाई 2024 तक आवेदन कर दें।
कहां से जानकारी लें : **https://rectt.bsf.gov.in/** पर जाएं और बीएसएफ 2024 का लिंक देखें। या इसके बारे में 1 से 7 जून के रोजगार समाचार में भी जानकारी ले सकते हैं।

■ इंडियन एअरफोर्स की ओर से एअरफोर्स कॉमन एडमिशन टेस्ट 2024 की सूचना जारी की गई है। यह परीक्षा फ्लाइंग, ग्राउंड ड्यूटी (टेक्निकल), ग्राउंड ड्यूटी (नॉन टेक्निकल) और फ्लाइंग ब्रांचेज में नियुक्तियों के लिए की जाएगी।
कुल पद: 137
अंतिम तिथि : 30 मई से आवेदन प्रक्रिया शुरू हो चुकी है, जो 28 जून तक चलेगी।
आवेदन कैसे करें : afcat. cdac.in पर जाएं व आवेदन करें।

■ भारतीय सेना की ओर से 52वीं टेक्निकल एंट्री स्कीम कोर्स के लिए सूचना जारी हो चुकी है। यह मौके का लाभ वे उठा सकते हैं, जिन्हें 12वीं में 60 फीसदी अंक मिले हों व जेईई मेन्स परीक्षा में शामिल हुए हों।
अंतिम तिथि : मई 13 से जून 13, 2024 के बीच ऑनलाइन आवेदन कर दें।
कैसे करें आवेदन : रोजगार समाचार (मई 18-24) 2024 देखें या **joinindianarmy.nic** पर जाएं। ऑनलाइन एप्लीकेशन टैब ढूंढें। यहां सभी नियम अच्छी तरह पढ़कर एप्लीकेशन फॉर्म भरें।

■ द इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकिंग पर्सोनल सेलेक्शन (आईबीपीएस) जल्द ही प्रोबेशनरी ऑफिसर्स (आईबीपीएस पीओ 2024) व क्लर्क (आईबीपीएस क्लर्क 2024) के चयन और आरआरबी पीओ व आरआरबी क्लर्क नोटिफिकेशन जारी करेगा। आधिकारिक सूचना के अनुसार अभी इसकी प्रारंभिक परीक्षा के लिए अगस्त महीने को अस्थायी रूप में तय किया गया है।
जानकारी कहां से लें : इसके बारे में नियुक्तियों की संख्या, आवेदन प्रक्रिया, परीक्षाओं आदि के लिए पूरी जानकारी हेतु **ibps.in** देखते रहें।

■ यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन की ओर से विविध पदों पर आवेदन आमंत्रित किए गए हैं।
कुल पद : 300, इसमें स्पेशलिस्ट ग्रेड 3 असिस्टेंट प्रोफेसर, डेपुटी सुपरिंटेंडेंट आर्कियोलॉजिस्ट, सिविल हाइड्रोग्राफिक ऑफिसर के पद शामिल हैं।
अंतिम तिथि : ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि 13 जून 2024 है।
आवेदन प्रक्रिया: चूंकि सभी अलग-अलग पद हैं, इसलिए उनके लिए योग्यता शर्तें अच्छी तरह से देख लें, फिर आवेदन करें। आवेदन के लिए देखें **upsc.gov.in**
(आवेदन करने से पहले अपने स्तर पर आधिकारिक स्रोतों से जानकारी जरूर लें।)

भेजें अपने सवाल

करियर या शैक्षिक कोर्स संबंधी आपके मन में कोई उलझन है या कोई जानकारी चाहते हैं, तो आप हमें अपने सवाल नीचे दी गई ईमेल पर भेज सकते हैं। हमारे विशेषज्ञ उसके जवाब देंगे। इस ईमेल आईडी का उपयोग करें
nayiraheincareer@gmail.com

ये सर्टिफिकेशन आपको बनाएंगे वेब डिजाइनर

टेक्नोलॉजी से जुड़े या उसकी जानकारी रखने वाले युवाओं के लिए वेब डिजाइनिंग का सर्टिफिकेशन अच्छी आय के मौके खोल सकता है। जानें यहां

नौकरी के नजरिए से बात करें, तो वेब डिजाइनिंग का स्किल मजबूत स्थिति में है। इस स्किल के माध्यम से वैश्विक स्तर पर रोजगार पाने की संभावनाओं में 23 फीसदी की वृद्धि हुई है। अच्छी बात यह है कि ऑनलाइन ट्रेनिंग के इस दौर में इस स्किल को सीखना आसान है। कई सर्टिफिकेशन कोर्स हैं, जिन्हें पूरा करके आप देश और विदेश की फ्रीलांस या फुलटाइम नौकरी से जुड़कर अच्छी आय कर सकते हैं।

क्यों बेहतर हैं सर्टिफिकेशन

वेब डिजाइनिंग के सर्टिफिकेशन मान्यता प्राप्त और प्रतिष्ठित संस्थानों की ओर से दिए जाते हैं। ये प्रमाणित करते हैं कि आपने कोर्स पूरा किया है और बाजार के मानक के अनुसार आपके पास वेब डिजाइनिंग के स्किल्स हैं। अपने लिए सर्टिफिकेशन चुनने से पहले उसकी मान्यता, अपने लिए उपयोगिता आदि को जांच लें। वेब डिजाइनिंग की समझ और स्किल देने वाले कुछ निशुल्क सर्टिफिकेशन कोर्स हैं:

■ **फ्रीकोडकैंप रेस्पॉन्सिव वेब डिजाइन सर्टिफिकेशन (freeCodeCamp Responsive Web Design Certification):** यह कोर्स विविध डिवाइसेज के तालमेल में वेबसाइट बनाने में कुशल बनाता है। मोबाइल फोन के दौर में यह बेहद जरूरी स्किल है। इसमें आपको सीएसएस3, एचटीएमएल-5, जावास्क्रिप्ट, बूट स्ट्रैप आदि सिखाए जाते हैं।
■ **कोर्सेरा पर मिशिगन यूनिवर्सिटी का इंट्रोडक्शन टु वेब डेवलपमेंट (Introduction to Web Development : Coursera) :** इस कोर्स में प्रमुख वेब टेक्नोलॉजी जैसे एचटीएमएल, सीएसएस और जावा स्क्रिप्ट के बारे में बताया जाता है। यह कोर्स उनके लिए बहुत अच्छा है, जो वेब डेवलपर के तौक पर काम करना चाहते हैं और इसके विविध पहलुओं में अपनी पकड़ मजबूत करना चाहते हैं।
■ **बिल्ड योर फर्स्ट वेब पेजेस विद एचटीएमएल ऐंड सीएसएस (Build Your First Web Pages With HTML and CSS :OpenClassrooms):** फ्रंट ऐंड वेब डेवलपमेंट समझने के लिए यह कोर्स आदर्श है। आप एचटीएमएल, सीएसएस की आधारभूत जानकारी पाते हैं। इस तरह आप इसमें अपनी रुचि भी समझ सकते हैं।
■ इसी तरह कोर्सेरा पर मिशिगन यूनिवर्सिटी का बेसिक्स ऑफ वेब डेवलपमेंट और कोडिंग आपको प्रमुख वेब लैंग्वेज के साथ ही वेब डिजाइनिंग के कई गुर सिखाता है। वेब डिजाइनिंग व डेवलपमेंट, दोनों पर पकड़ के लिए यह कोर्स अच्छा है। -अमन सिंह

वर्किंग इंटरव्यू की जानें जरूरी बातें

जॉब टिप्स

नौकरी के लिए वर्किंग इंटरव्यू आपके कौशल, व्यक्तित्व और व्यवहार को कार्य परिस्थितियों में परखता है। क्या करें कि चयन सुनिश्चित हो, पढ़ें कुछ टिप्स

रचनात्मक क्षेत्रों, हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री, मेकैनिकल स्किल के काम, कस्टमर सर्विस या सेल्स आदि के क्षेत्र में आपको वर्किंग इंटरव्यू का सामना करना पड़ सकता है।
क्या हैं वर्किंग इंटरव्यू : इस तरह के इंटरव्यू में वास्तविक कार्य अनुभव की शैली होती है। आपको एक कमरे में बैठकर सवालों के जवाब देने के बजाय कुछ काम या प्रोजेक्ट दिए जाएंगे, जो उन स्थितियों में आपके कौशल की परीक्षा होंगे, जिसके लिए नियुक्ति होनी है। इस तरह मैनेजर समझने की कोशिश करता है कि आप वास्तविक स्थिति में आप कैसे काम करेंगे। आपको भी कंपनी की कार्यसंस्कृति के बारे में अंदाजा लगने में मदद मिलती है।

कुछ बातें रखें ध्यान

■ **कंपनी के बारे में जानें :** कंपनी के इतिहास, आदर्श, लक्ष्य आदि के बारे में अच्छी तरह जानें। अपने क्षेत्र के किसी वरिष्ठ से समझने की कोशिश करें कि आपको क्या टास्क दिए जा सकते हैं और उसकी तैयारी कर लें।
■ **निर्देशों को अच्छी तरह पढ़ कर जाएं :** आमतौर पर हर इंटरव्यू के बुलावे में विस्तार से निर्देश दिए जाते हैं। इन्हें पढ़कर जाएं, ताकि आप हर तरह से तैयार हों और सभी आवश्यक दस्तावेज, उपकरण आपके पास हों।
■ **अपने टेक्निकल स्किल को दिखाने के लिए तैयार रहें :** आमतौर पर अगर वर्किंग इंटरव्यू है, तो आपसे आपके रिज्यूमे में दर्शाए गए स्किल्स से संबंधित काम भी दिया जा सकता है। जैसे कि अगर आप किसी वेब प्रोग्राम में महारत की बात करते हैं, तो हो सकता है आपको उसे करने को दिया जाए। ऐसे में वही लिखें, जिसमें वाकई आपको महारत हो। या फिर रिज्यूमे में 'बढ़िया कौशल' और 'जानकारी' के दो वर्ग बनाकर उस हिसाब से अपने स्किल दर्ज करें। जो भी जानकारी दें, सही दें।
■ **आत्मविश्वास जताएं :** अपने काम को पूरा करने में आत्मविश्वास जताएं। अगर चुनौती महसूस हो, तो शांत और सकारात्मक बने रहें। अपना ध्यान समाधान पर लगाएं। अगर कोई प्रश्न मन में है, तो उसे पूछने में हिचकिचाएं नहीं। कंपनी की कार्यसंस्कृति, अपेक्षित जिम्मेदारी आदि से संबंधित सवाल पूछ सकते हैं।
-रिया शर्मा

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष : आशा-निराशा के भाव मन में हो सकते हैं। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। कुटुंब के किसी बुजुर्ग से धन मिल सकता है।

वृष : मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें। परिवार का साथ मिलेगा। कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ के मौके मिलेंगे।

मिथुन : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन परेशान भी हो सकता है। नौकरी में कार्यक्षेत्र में बदलाव भी हो सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा। परिवार की सेहत का ध्यान रखें।

कर्क : आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। परंतु धैर्यशीलता बनाए रखने के प्रयास करें। कारोबार में लाभ में वृद्धि होगी। कारोबार के विस्तार के लिए माता से धन मिल सकता है।

सिंह : आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। फिर भी संयत भी रहें। व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। कारोबार में भागदौड़ बढ़ेगी।

कन्या : मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भी बहुत रहेगा। शैक्षिक और बौद्धिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेगी। बौद्धिक कार्यों से आय में वृद्धि होगी। मित्रों का सहयोग मिलेगा।

तुला : संयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने के प्रयास करें। कारोबार में कठिनाई आ सकती है। भागदौड़ अधिक रहेगी। आय में कमी व खर्च अधिक की स्थिति हो सकती है।

वृश्चिक : मन अशांत रहेगा। धैर्यशीलता बनाए रखें। अपनी भावनाओं को वश में रखें। कारोबार में वृद्धि होगी। लाभ के अवसर मिलेंगे। परिवार का साथ मिलेगा।

धनु : आत्मविश्वास में कमी। मन परेशान रहेगा। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। मित्रों का सहयोग मिलेगा। कारोबार में किसी मित्र से लाभ के अवसर मिल सकते हैं।

मकर : कारोबार में वृद्धि होगी। किसी मित्र का सहयोग भी मिल सकता है। किसी संपत्ति से आय के साधन बन सकते हैं। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें।

कुंभ : मन प्रसन्न रहेगा। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे। परंतु कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा।

मीन : किसी अज्ञात भय से परेशान हो सकते हैं। संयत रहें। व्यर्थ के क्रोध से बचें। संतान की सेहत का ध्यान रखें। कारोबार में वृद्धि होगी। परिवार का साथ मिलेगा।

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋषिकांत गोस्वामी

06 जून, गुरुवार, 16 ज्येष्ठ (सौर) शक संवत् 1946, 24 ज्येष्ठ मास प्रविष्टे (पंजाब पंचांग) 2081, 28 जिल्काद सन् 1445, ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या सायं 06.08 मिनट तक तदनंतर प्रतिपदा। रोहिणी नक्षत्र रात्रि 08.17 मिनट तक पश्चात मृगशिरा नक्षत्र, शूल योग, चतुष्पद करण, चंद्रमा वृष राशि में (दिन-रात)। **सूर्य उत्तरायण।** सूर्य उत्तर गोल। ग्रीष्म ऋतु। दोपहर 01.30 मिनट से अपराह्न 3 बजे तक राहुकालम्। ज्येष्ठ अमावस। शनैश्चर जयंती। वट सावित्री व्रत (अमावस्या पक्ष)।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

हमारे घर का अग्नि कोण कटा हुआ है। कृपया बताएं इसके क्या-क्या परिणाम होते हैं तथा क्या उपाय हैं?
-रवि सिंह, बुलंदशहर

किसी स्थान का अग्नि कोण कटता है तो ऐसे भवन के लोग प्रायः धन की कमी से परेशान रहते हैं तथा स्त्रियों के लिए समस्या कारक होता है। निम्न उपाय करें:
- वहां पर एक हवन करते हुए साधु की तस्वीर लगाएं। एक छोटा सा लाल रंग का त्रिकोण बना दें।
- किसी भी प्रकार से वहां पर पानी न रखें। एक लाल रंग का जीरो वाट का बल्ब कुछ दिन लगाएं फिर बंद कर दें।

वर्ग पहेली : 7625

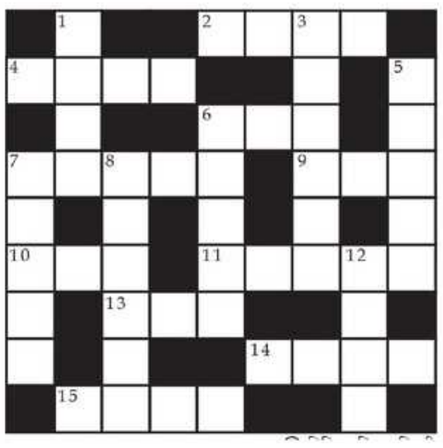

बाएं से दाएं
2. घुमक्कड़; पर्यटन करने वाला (4)
4. बसा हुआ स्थान; बस्ती; आबादी; क्षेत्र; जिला (4)
6. जान से मारने वाला; कातिल; खूनी; हत्या करने वाला (3)
7. मन के अनुकूल; मन को भाने वाला (5)
9. व्यवसायी; वाणिज्य करने वाला; वैश्य (3)
10. कुशल; जानकार; प्रवीण; सिद्धहस्त (3)
11. रचयिता; निर्माता; लेखक; साहित्यकार (5)
13. गरमी या परिश्रम के कारण शरीर से निकला पानी; स्वेद (3)
14. संगी-साथी; लाव-लश्कर; नौकर-चाकर; अनुयायी (4)
15. अन्न-जल; खाना-पीना (2,2)

ऊपर से नीचे
1. बिगाड़; विरोध; झंझट; झगड़ा (4)
3. टक्कर होना; भिड़ंत होना; मुठभेड़ होना; विरोध होना; संघर्ष होना (4,2)
5. ज्यादातर; बहुधा; प्रायः (5)
6. अति करना; औचित्य की सीमा लांघना (2,3)
7. इच्छा रोकना; उदास होना (2,3)
8. ओले बरसना; चौपट होना; नष्टभ्रष्ट होना; मनोरथ भंग होने का सामान मिलना (3,3)
12. काम करने वाले लोग; कार्यशक्ति (4)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली 7624 का उत्तर

1प	र्थ	2वे	क्ष	3क	■	4ए	■	5कि
ना	■	द	■	6ले	प	क	र	ना
ह	■	ना	■	जा	■	क	■	रा
7दे	ह	■	8या	द	क	र	ना	■
ना	■	9अ	■	ह	■	ना	■	10त
■	11ना	म	च	ल	ना	■	12वा	ला
13नि	■	ल	■	उ	■	14क	■	शी
15के	वि	ता	पा	ठ	■	पा	■	दे
ट	■	स	■	16ना	म	ल	गा	ना

सुडोकू : 7609 * मध्यम

6	5				1			
4					2	3		
	8		9		3			
9								
7	3	8		5		2	6	1
								4
			3		6		5	
		1	8					3
			1				9	2

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

हल : सुडोकू नं.7608

1	7	8	9	6	3	4	5	2
6	9	4	2	7	5	3	1	8
5	2	3	8	4	1	9	7	6
4	1	6	7	3	9	8	2	5
2	8	7	5	1	4	6	9	3
9	3	5	6	8	2	7	4	1
3	4	9	1	5	6	2	8	7
7	5	2	3	9	8	1	6	4
8	6	1	4	2	7	5	3	9